बी ए. तृतीय वर्ष

-राजनीति विज्ञान

प्रथम प्रश्न पत्र भारतीय विदेश नीति

यूनिट प्रथम

डॉ स्नेहलता व्यास

प्राध्यापक राजनीति विज्ञान

भेरूलाल पाटीदार शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय महू (इंदौर) मध्य प्रदेश

—--------

भारत की विदेश नीति के सिद्धांत अथवा आर्दश

किसी भी देश की विदेश नीति पर आंतरिक एवं बाह्य वातावरण के साथ-साथ ऐतिहासिक परंपरा और विरासत विभिन्न संगठनों विचारधाराओं आदि का भी व्यापक प्रभाव पड़ता है भारत देश भी इसका अपवाद नहीं है इन्हीं सभी तत्वों को दृष्टिगत रखते हुए भारत की विदेश नीति के सिद्धांतों का निर्धारण किया गया है विदेश नीति का निर्धारण करते समय इतिहास राष्ट्रीय आंदोलन के विकास एवं आदर्शों की विरासत को दृष्टिगत रखा गया है

निम्नलिखित है--

—'-----

1. तटस्थता अथवा असंलग्नता

भारत का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि इसने किसी भी सैनिक गुट मे सम्मिलित न होकर तटस्थता अथवा असंलग्नयता की नीति अपनाई है। लेकिन तटस्थता का यह अर्थ बिल्कुल भी नही है कि भारत विश्व की मे घटित विभिन्न घटनाओं को अनदेखा करगा और ना ही विश्व से अगल अपने को निष्क्रिय रखना हैं।

—------

2. अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव, सहयोग एवं मित्रता को बनाए रखना

भारत की विदेश नीति का एक आर्दश अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव, सहयोग एवं सभी राष्ट्रों से मित्रता बनाए रखने का प्रयास करना हैं।

—--------

3. सहअस्तित्व अथवा पंचशील

भारत ने सदैव से ही सहनशीलता के रास्ते को अपनाया है यही सहअस्तित्व आधार हैं। विभिन्न राष्ट्रों के अस्तित्व के प्रति सहनशीलता को पंचशील के नाम से जाना जाता हैं। पांच सिद्धांत निम्नलिखित है

1 राज्यों द्वारा एक दूसरे की संप्रभुता व अखंडता के प्रति सम्मान का भाव रखना

2 परस्पर अनाआक्रमण की नीति अपनाना

3 राज्यों के द्वारा एक दूसरे के आंतरिक मामलों में किसी भी कारण से हस्तक्षेप ना करना

4समानता व पारस्परिक लाभ के सिद्धांतों पर दृढ़ रहना

5 शांतिपूर्ण सह अस्तित्व तथा आर्थिक सहयोग हेतु प्रयास करना

4. लोकतंत्र में विश्वास और समर्थन

भारतीय विदेश नीति लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था का समर्थन करती है। हालांकि, भारत विचारधाराओं के थोपे जाने में विश्वास नहीं करता है, इसलिए भारत ने सरकार के किसी भी रूप चाहे वह एक लोकतंत्र, राजशाही या सैन्य तानाशाही हो के साथ संबंधों का प्रयास किया है। भारत का मानना है कि यह सबसे अच्छा है कि किसी देश के लोगों पर अपने नेताओं को चुनने या हटाने या शासन के रूप को बनाए रखने या बदलने के लिए छोड़ दिया जाए। अर्थात भारत किसी अन्य देश या समूह द्वारा बल या अन्य माध्यमों से किसी विशेष देश में शासन परिवर्तन या उल्लंघन के विचार का समर्थन नहीं करता है।

—--

5. साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद एवं रंगभेदपरक असमानता का विरोध

भारत में सदैव ही जाति भेदभाव अथवा किसी भी आधार पर भेदभाव का विरोध किया है स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व दक्षिण अफ्रीका में गांधी जी के नेतृत्व में इसी भेदभाव पूर्ण नीति का विरोध किया गया पंडित नेहरू के शब्दों में हम पूर्ण रुप से नाजीवाद के नस्लवाद का खंडन करते हैं चाहे यह कहीं भी और किसी भी रूप में पाया जाता हो भारत हमेशा से ही साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद एवं रंगभेद असमानता का विरोधी रहा हैं अतः यह भारत की विदेश नीति का सिद्धांत हैं।

—-------

6. विश्व शांति को प्रोत्साहन

भारत विश्व शांति मे विश्वास रखता है। भारत विश्व शांति के लिए हमेशा प्रयासरत रहता हैं। भारत की विदेश नीति का एक सिद्धांत विश्व शांति को प्रोत्साहन देना हैं। भारत में संयुक्त राष्ट्र संघ व अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के शांति स्थापना के प्रयासों का सदैव ही समर्थन करते हुए अपेक्षित सहयोग किया है भारतीय सेनाओं ने संयुक्त राष्ट्र संघ की शांति स्थापना की कार्यवाही में भी कई भाग भाग लिया है

—-----

7. आन्तरिक मामलो मे विदेशी हस्तक्षेप का विरोध

भारत की विदेश नीति का सिद्धांत आन्तरिक मामलो मे विदेशी हस्तक्षेप का भारत विरोधी हैं भारत इसका विरोध करता हैं।

—-----

8. वैश्विक मुद्दों पर आम सहमति पर जोर

भारत वैश्विक मुद्दों पर चर्चा और इस तरह से विश्व व्यापार व्यवस्था, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, बौद्धिक संपदा अधिकारों, वैश्विक शासन के रूप में वैश्विक आयामों के मुद्दों पर वैश्विक आम सहमति की वकालत करता है।

——---

9. संयुक्त राष्ट्र में विश्वास

भारतीय विदेश नीति की एक मुख्य विशेषता संयुक्त राष्ट्र संघ में उसका विश्वास है। संयुक्त राष्ट्र का संस्थापक सदस्य होने के नाते उसके उद्देश्यों और सिद्धांतों के लिए भारत हमेशा प्रतिबद्ध रहा है और इसके शांति-संचालन कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान देता रहा है। भारत जी -4 समूह का सदस्य है और यह राष्ट्र की सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता के लिए भी इच्छुक है।

—--

10. परमाणु ऊर्जा का शांतिपूर्ण उपयोग एवं परमाणु अप्रसार

गुट निरपेक्ष देशों के समूह के साथ भारत ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निरस्त्रीकरण के विचार को हमेशा आगे रखा था हालांकि भारत परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग के विचार का समर्थन करता है। अब, यद्यपि भारत एक परमाणु हथियार संपन्न राज्य है, लेकिन विदेश नीति के अपने इस मूल सिद्धांत के लिए प्रतिबद्ध है कि परमाणु हथियारों के वैश्विक उन्मूलन से इसकी सुरक्षा के साथ-साथ दुनिया के बाकी हिस्सों में भी सुरक्षा में वृद्धि होगी, साथ ही भारत प्रथम प्रयोग न करने की नीति और गैर परमाणु राष्ट्रों के विरुद्ध भी परमाणु हथियार का प्रयोग न करने पर अपनी सहमति व्यक्त करता है।

——--

निष्कर्ष

इस प्रकार भारत की विदेश नीति शांति और सहयोग पर आधारित होने के साथ ही अपने राष्ट्रीय हितों की प्राप्ति पर भी जोर देती है। राष्ट्रों के मध्य सहयोगात्मक संबंधों के लिए अंतरराष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय सहयोग पर बल देने के साथ ही मतभेद के द्विपक्षीय मुद्दों के समाधान हेतु भारत हमेशा से द्विपक्षीय बातचीत पर बल देता आया है बदलते वैश्विक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए भारत ने अपनी विदेश नीति को नया आयाम देने का प्रयास किया है। भारत अब यह सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत है कि वह वैश्विक मुद्दों और कार्यक्रमों को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करे। भारत अब नियम का पालन करने के बजाय नियम बनाने वाले देश के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज करना चाहता है। आज भारत बहु-ध्रुवीय विश्व में एक मजबूत ध्रुव के रूप में उभर रहा है।